International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(2): 80-82
Received: 19-05-2022
Accepted: 22-06-2022

डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत), सी.एम.के. नेशनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रंजना ग्रेवर
सह–आचार्य (संगीत), सी.एम.के. नेशनल पी.जी. गर्ल्ज कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत

आधुनिक समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत के विस्तार में मीडिया का योगदान

डॉ. रंजना ग्रेवर

सारांश
20 वीं शताब्दी का आरम्भ न केवल भारत के स्वतन्त्र युग का क्रान्ति काल ही नहीं, अपितु संगीत कला की दृष्टि से भी एक अनोखी क्रान्ति का युग माना जा सकता है। आज संगीत का क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया है कि अधिक से अधिक लोग उसे सुनते, समझते और सीखते हैं। संगीत महफिल, संगीत सम्मेलन, आकाशवाणी, दूरदर्शन, रिकार्ड, टेपरिकार्ड के कारण अत्यन्त सहज होकर घर–2 फैल गया है।

कुटशब्दः संगीत, स्वतन्त्र युग, क्रांति, संगीत सम्मेलन

प्रस्तावना
आज के दौर में संगीत के विभिन्न पहलूओं पर विभिन्न पुस्तकें, ग्रन्थ एवं शोध कार्य प्रकाशित हो रहे हैं। बन्दिशों की स्वरलिपियाँ, नृत्य के तोड़े–टुकड़े तथा तबला, परवावज आदि के कायदे–पेशकारा लिखित रूप में उपलब्ध है। जिस गायकी या साज़ को सुनने के लिए आज से 40 वर्ष पूर्व तक एक घरानेदार कलाकार को सहमत करना कठिन था, वर्तमान में उसी गायकी या बाज़ को हम सहज रूप से रेड़ियो, टेलीविजनों या आडियो–विडियो रिकार्डों में बार–2 देखते–सुनते हैं। संगीत शिक्षण के क्षेत्र में भी उपरोक्त साधनों का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान माना जा रहा है। ये साधन भले ही गुऊ का स्थान न ले सकने में सक्षम हों परन्तु एक प्रतिभाशाली विद्यार्थी के लिये सहायक तो सिद्ध हो ही सकते हैं।
इन उपकरणों एवं साधनों की क्या उपादेयता है? शास्त्रीय सगीत के प्रचार–प्रसार में और उसके स्तर को ऊपर उठने में इनकी क्या भूमिका है? इस विषय पर प्रकाश डालना यहाँ असंगत न होगा।

आकाशवाणी
आकाशवाणी शास्त्रीय संगीत को जन–सुलभ व लोकप्रिय बनाने में महत्वपर्णू भूमिका निभा रही हैं, जो सराहनीय है।
सर्वप्रथम 16 मई 1924 ई0 में रेड़ियो के माध्यम से संगीत प्रसारण आरम्भ हुआ। कालान्तर में शास्त्रीय–उपशास्त्रीय व सुगम संगीत आकाशवाणी का मुख्य आकर्षण है, वस्तुतः अधिकांश समय संगीत के विभिन्न कार्यक्रमो को ही दिया जाता है।

आकाशवाणी के विभिन्न कार्यक्रम
संगीत का राष्ट्रीय प्रसारण का शुभारम्भ सर्वप्रथम पं0 भातखण्डे जी ने किया। जब यह कार्यक्रम प्रारम्भ किय गया तब इसकी अवधि कम थी जो धीरे–2 बढ़ती रही और कार्यक्रम मंगलवार और शनिवार को रात्रि के समय प्रसारित की जाती है। इस कार्यक्रम को विशेषता यह है कि इन संगीत कार्यक्रमों में देश के उच्चकोटि के संगीतकारों को तो आंमत्रित किया ही जाता है साथ ही उभरते कलाकारों को भी अवसर प्रदान किया जाता है। कलाकार को राष्ट्रीय स्तर तक मंच प्रदान करना, असंख्य श्रोताओं के कलाकार का परिचय करवाना आदि आकाशवाणी के प्रशंसनीय प्रयत्न है।
संगीत का राष्ट्रीय प्रसारण में शास्त्रीय व उप–शास्त्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत घ्रुपद, टप्पा, ठुमरी, घमार इत्यादि सम्मिलित रहते हैं।

1. शास्त्रीय संगीत के ही प्रचार–प्रसार के लिए प्रातः कालीन समय में गए जाने वाले रागों को लोकप्रिय बनाने हेतु मारा के अन्तिम रविवार के दिन शास्त्रीय संगीत (गायन) का एक विशेष कार्यक्रम दिल्ली केन्द्र से प्रसारित किया जाता है।
2. प्रत्येक मंगलवार के दिन दिल्ली केन्द्र से मंगलवारीय संगीत सभा के अन्तर्गत उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रसारण होता है।
3. राष्ट्रीय स्तर पर 'अखिल भारतीय संगीत के कार्यक्रमों', के अन्तर्गत उच्चकोटि के गायकों अथवा वादकों का कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। यह कार्यक्रम आकाशवाणी के सभी केन्द्रों द्वारा प्रसारित किये जाते हैं।

4. एक अन्य कार्यक्रम 'चयन' जिसका प्रसारण रविवार रात्रि 10:00 से 11:00 बजे तक होता है। इस 'चयन' नामक कार्यक्रम की विशेषता यह है कि श्रोताओं की मांग पर प्रस्तावित कलाकार का चयन करके उसका कार्यक्रम आकाशवाणी के संग्राहलय से प्राप्त रिर्काडिंग द्वारा प्रसारित किया जाता है। 'चयन' कार्यक्रम के सौजन्य से ..... आकाशवाणी संग्रहालय में एकत्रित दुर्लभ संगीतकारो के रिकार्ड किए गए कार्यक्रमों को आकाशवाणी द्वारा ही सुन पाना संभव हुआ है।
5. इसके अतिरिक्त आकाशवाणी द्वारा रेडियो संगीत सम्मेलन, संगीतिक परिचर्चायें, सांगीतिक प्रतियोगिताएँ, संगीतिक सम्मेलनों का प्रसारण, अखिल भारतीय आकाशवाणी परिसंवार, संगीत पाठ आदि समय–2 पर प्रसारित की जाती है।

आज आकाशवाणी ने संग्रहालय में अनेक श्रेष्ठतम गायकों अथवा वादकों की बहुमूल्य भारतीय संगीत की परम्परागत शैलियों को सुरक्षित रखकर अत्यन्त ही सराहनीय योगदान दिया है। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं कि आज कुछ कलाकार जो सफलता की ऊँचाईयों को छू रहे है उनका प्ररेणा स्त्रोत आकाशवाणी रही।

दूरदर्शन

जनजीवन में सांस्कृतिक विकास की चेतना जागृत होने से संगीत, साहित्य एवं अन्य कलाओं का चर्तुदिक विकास हुआ। इसी समय दूरदर्शन का अर्विभाव हुआ तो कलाकार केवल कानों से सुने जाते थे अब प्रत्यक्ष भी दिखाई देने लगे। गायन–वादन के अतिरिक्त नृत्य कला के कलाकार भी दूरदर्शन पर अपनी कला का प्रदर्शन करने लगे। संगीतिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त संगीत एवम् नृत्य के पाठ, संगीत, पत्रिका, संगीत परिसम्वाद, संगीत प्रतियोगिता, पाश्चात्य संगीत, राष्ट्रीय वाघवृन्द, वृन्दगान, वृन्दवादन, चित्रपट्ट संगीत, तथा प्रवासी भारतीयों के लिए विविध कार्यक्रम श्रोताओं तक प्रत्यक्ष रूप में पहुंचने लगे।

भले ही दूरदर्शन पर संगीत के कार्यक्रम आकाशवाणी अपेक्षा कम हों किन्तु फिर भी दूरदर्शन के प्रयासों को नकारा नहीं जा सकता। समय–2 दूरदर्शन पर संगति के अनेक कार्यक्रम दर्शाये गये हैं जिनमें से ग्रेट मास्टरज, धारावाहिक साधना, संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम, विभिन्न पर्वों व उत्सवों में उच्चकोटि के कलाकारों को स्टुडियो में बुलाकर उनके कार्यक्रम प्रस्तुत करवाना और यू0ति0सी0 के अन्तर्गत भी संगीत सम्बन्धी अनेक कार्यक्रम दिखाये जाते हैं जो एक प्रशसनीय प्रयास कहा जा सकता है।

चित्रपट्ट संगीत

संगीत की कोई ऐसी विद्या नहीं, जिसका परिष्कृत और मधुरतम रूप फिल्मी संगीत में प्रयुक्त न हुआ हो। पाकीज़ा, बंसत–बहार, तानसेन, बैजूबावरा, गूंज उठी शहनाई, झनक–झनक पायल बाजे, रानी रूपमती, नागिन, नवरंग, सरगम, नाचे–मयूरी, जल बिन मछली नृत्य बिन बिजुरी इत्यादि अनेक संगीत प्रधान फिल्मों ने संगीत जगत पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है।

पं0 भीम सेन जोशी, किशोरी, अमोनकर, पं0 रविशंकर, उ0 अली अकबर खाँ, बड़े गुलाम अली खाँ, पं0 जगननाथ, प0 वि0 स0 पटवर्धन, हीराबाई बड़ौदकर, ड0 अल्लारखा खाँ, उ0 जाकिर हुसैन, पं0 हरि प्रसाद, चौरसिया, पं0 शिव कुमार शर्मा आदि शास्त्रीय संगीत के दिग्गज गायक, वादक और नर्तकों का पदार्पण भी फिल्म संगीत में हुआ और फलस्वरूप वर्तमान संगीत की सबसे सशक्त विद्या के रूप में फिल्मी संगीत सम्पूर्ण संगीत जगत पर राज्य कर रहा है।

फिल्मी निर्देशकों को चाहिये कि वे भारतीय शास्त्रीय संगीत के कलाकारों के जीवन–चरित्र पर आधारित फिल्मों का निर्माण करें, ताकि शास्त्रीय संगीत फिल्मों के माध्यम से जनसाधारण तक मनोरंजक रूप में पहुँचे।

आड़ियो–विड़ियो या विजुअल रिकार्डस

जो चीज सुनी जा सके वह 'आडियो' और जो देखने से सम्बन्ध रखती हो उसे ''विजुअल'' या ''विडियो'' रिकार्डस कहते हैं। वैज्ञानिक अनुसन्धानों ने ध्वनि के प्रक्षेपण और ग्रहण करने की तकनीक को बहुत विकसित कर लिया है। वर्तमान में आडियो–विडियो की विधा उत्कृष्ट और उच्चतम रूप में हमारे सामने हैं। घन्टों तक दिखाई देने वाले दृश्यों को ध्वनि सहित एक छोटी सी विडियो–टेप या डिस्क पर रिकॉर्ड करके शताब्दियों तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत एवम् अन्य कलाओं के विकास में आडियो–विजुअल का माध्यम नई प्रणाली और नई परम्परा को जन्म देगा, इसमें कोई सन्देह नहीं।

विभिन्न संगीत सम्मेलनों का संगति के विकास में योगदान

शास्त्रीय संगीत के पुनरूत्थान के लिए स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जो प्रयत्नह ुये हैं, इसका क्षेय संगीत को उन महान विभूतियों को है, जिन्होंने संगीत को अंधकार से बाहर निकाल संगीत सम्मेलनों के द्वारा जन–समाज में प्रतिष्ठित किया।

बड़े–2 संगीतज्ञों जैसे–तानसेन समारोह, स्वामी हरिदास सम्मेलन, विष्णु दिगम्बर और भातखण्डे जी जैसे संगीतज्ञों की स्मृति में संगीत सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं।

इन सम्मेलनों के अतिरिक्त बाबा हरिबल्लभ संगीत सम्मेलन (जांलघर), शंकरलाल संगीत सम्मेलन (दिल्ली), बैजू–बावरा संगीत सम्मेलन (मथुरा), रावाई गंधर्व संगीत सम्मेलन (मथुरा) इत्यादि प्रमुख है।

निश्चय ही संगीत सम्मेलनों की भूमिका शास्त्रीय संगीत के विकास एवं प्रचार–प्रसार के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। संगीत सम्मेलनों के द्वारा हम प्रतिष्ठित कलाकारों के अतिरिक्त ..... होनहार कलाकरों से भी परिचित हो सकते हैं।

साथ ही इन विभिन्न संमीत सम्मेलनों के कारण संगीत सीमित लोगों के हाथ से निकलकर अब साधारण जन–समुदाय में पहुंचकर प्रतिष्ठित हो रहा है।

विभिन्न संगीतिक पत्र–पत्रिकायें

विभिन्न संगीतिक पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन द्वारा भारतीय संगीत के क्षेत्र का जो विकास हुआ है, वह सराहनीय है, अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

मासिक पत्रिकाओं में 'संगीत' हाथरस (उ0प्र0) से 'संगीत कला विहार' मिरज (म0प्र0) से, म्यूजिक मिरर हाथरस (उ0प्र0) से (अंग्रेजी पत्रिका) प्रकाशित होती है।

त्रैमासिक पत्रिकाओं में 'संगीतिका' संगीत सदन प्रकाशन ईलाहाबाद से, 'संगीत नाटक' संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली से, 'विश्व–वीणा' कलकता से प्रकाशित होती है।

आलोचना

यद्यपि आधुनिक युग में हिन्दुस्तानी संगीत का जैसा व्यापक और महान प्रचार हुआ है। वह 50–60 वर्ष पहले नहीं हुआ था। आज किसी विद्यार्थी को संगीत सीखने के लिये गुरू के घर रहकर उनकी सेवा करना आवश्यक नहीं। आज अलग–अलग घरानों की विद्याा एक ही मंच पर सुनने को मिलती है, परन्तु संगीत के क्षेत्र में कलाकार बनने के लिये उपरोक्त चर्चित विद्याओं पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। क्योंकि हमारा भारतीय संगीत तो भावना प्रधान, भक्ति प्रधान और मधुर भावनाओं की कला का है।

कालान्तर में यद्यपि संगीत का प्रचार–प्रसार घर–2 में हो गया है और अनेक विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्व–विद्यालयों में संगीत की शिक्षा मुक्त रूप से प्रदान की जा रही है, तथापि फिर भी मुक्त वातावरण में संगीत की सूक्ष्मताओं तथा महनताओं में यह विद्यालयीन छात्र अवगत नहीं हो पा रहे हैं। इस कारण विद्यालयीन स्तर पर संगीत का स्तर धीरे–धीरे गिरता जा रहा है।

भले ही पं0 विष्णु नारायण भातखण्डे तथा पं0 वि0 दि0 पुलस्कर ने अपने कठोर परिश्रम एवम् कठिन साधना से संगीत को अपने सीमित दायरों से बाहर निकाल कर आम जनता में संगीत सुलभ अवश्य किया है, व समाज में संगीत को सम्मानीय स्थान भी दिलाया है, परन्तु घरानेदार गायकी के अभाव में क्या हम आधुनिक शिक्षा पद्धति से उच्चकोटि के कलाकार को पैदा कर सकते हैं – शायद कभी नहीं।

सुझाव

वर्तमान सन्दर्भ में शास्त्रीय संगीत के विकास के लिये दूरदर्शन, आकाशवाणी, संगीतसम्मेलन, संगीतिक परिचर्चाएँ, संगीतिक पत्र–पत्रिकायें, चित्रपट्ट संगीत आदि सभी विधायें अपनी–अपनी महत्वपूर्ण भूमिकायें निभा रहे हैं। हमारी सरकार को चाहिये कि संगीत के स्तर को ऊँचा उठाने के लिये प्रतिभावान विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्ति हेतू ऐसी संस्थाओं की स्थापना की जाये, जहाँ कलाकारों को अपने निर्वाह के साधन उपलब्ध हों, अर्थात वे आर्थिक रूप से चिन्तामुक्त हों। ऐसी संस्थाओं में विद्यार्थी श्रेष्ठ गुरूओं से शिक्षा प्राप्त कर एक अच्छा कलाकार बन सकता है। ऐसा प्रयास कोलकता की ''आई0टी0 सी0 रिसर्च अकादमी'' द्वारा हो रहा है। निसन्देह ही वहां से अच्छे कलाकार निकलने की संभावना है व कई निकल चुके है। अभी हाल ही में पं0 हरि प्रसाद चौरसिया जी ने भी संगीत शिक्षा की गुरू शिष्य प्रणाली को ध्यान में रखते हुये पुने में ''गुरूकुल'' नामक संस्था प्रारम्भ की है, जो अति सराहनीय कार्य है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण, निबंध संगीत
2. पंडित अहोबल, संगीत परिजात
3. डॉ. सोमनाथ, रागाविभोध
4. अमिता शर्मा, शास्त्रीय संगीत का विकास
5. डॉ. मधुबाला सक्सेना, संगीत मधुबन